शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -5
March
2024

झाँसी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन

[1]आनन्द कटारे, [2]हरीश कुमार, [3]इंद्रवेश आर्य
सहायक आचार्य
राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पी.जी. कॉलेज, चिरगाँव, झाँसी

सारांश

माध्यमिक शिक्षा शैक्षिक संरचना की मध्यस्थ कड़ी है, जिसके नीचे प्रारम्भिक शिक्षा और ऊपर विश्व विद्यालीय शिक्षा होती है। विकासशील भारत की जनतंत्रीय प्रणाली में माध्यमिक शिक्षा का विशेष महत्व है। माध्यमिक शिक्षा देश की जनशक्ति का स्त्रोत है। उच्च कक्षाओं में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी और प्राथमिक स्कूलों के लिए अधिकांश शिक्षक माध्यमिक शिक्षा के द्वारा ही तैयार किये जाते हैं। विश्वविद्यालयों का शैक्षिक स्तर एवं विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता आदि बहुत कुछ माध्यमिक स्तर की शैक्षिक नींव पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की सुदृढ़ता पर ही राष्ट्र की शक्ति एवं विषय पर निर्भर करता है। मध्यवर्ती स्तर पर कार्य करने वाले अनेक औद्योगिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नेता इसी शिक्षा से तैयार होकर निकलते हैं। अधिकांश देशों में माध्यमिक शिक्षा के बाद ही विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता है। विद्यार्थी माध्यमिक स्तर पर अपने व्यक्तित्व को समझें व उचित समायोजन करके सफलता को प्राप्त कर सकें। इसलिए शोधार्थी ने अनुसंधान विषय ‘‘झाँसी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समयोजन का अध्ययन’’ नामक शोध शीर्षक का चयन शोध कार्य हेतु किया गया एवं शोध अध्ययन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कुछ निश्चित उद्देश्यों का निर्माण किया गया। शोध अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के झाँसी जनपद में स्थित सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में योगदान देती है। व्यक्ति की वैयक्तिता का पूर्ण विकास करती है उसे वातावरण

से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती हैं। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिये तैयार करती है और उसके व्यवहार विचार एवं दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज विश्व देश के लिये हितकर होता है। शिक्षा स्थिर नहीं है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। समय के साथ-साथ इसके अर्थ और उद्देश्य में परिवर्तन होता रहा है।

कार्टर वी. गुड महोदय ने माध्यमिक शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहा कि ''माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो सामान्यतः 12 से 17 वर्ष वर्ग के बालकों के लिये होता है। इस काल में अध्ययन के प्रमुख उपकरणों का प्रयोग स्वामित्व, अभिव्यक्ति, वैचारिक स्वतन्त्रता विविध जानकारी प्राप्त करने, बौद्धिक कुशलता, अभिरूचि और आदर्शों तथा आदतों के निर्माण पर बल दिया जाता है।''

हुमायूँ कबीर के अनुसार, ''समाज के शिक्षा के किसी भी कार्यक्रम में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यहाँ से प्राथमिक तथा वयस्क शिक्षा के लिये अध्यापक मिलते हैं। यह छात्रों को विश्वविद्यालयों तथा उच्चतर अध्ययन की दूसरी संस्थाओं के लिये तैयार करते हैं। कुछ थोड़े से विद्यार्थी जो उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिये आगे जाते है, वे तब तक विश्वविद्यालयों में प्राप्त होने वाले अवसरों का पूरा लाभ नहीं उठा सकते, जब तक कि माध्यमिक शिक्षा की स्वस्थ प्रणाली द्वारा इसका आधार पक्का न कर दिया जाए अतएव यदि कोई कारण न भी हो तो केवल इन कारणों को दृष्टि में रखते हुये यह आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा उच्च कोटि की हो तभी यह आधुनिक युग की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगी।''

हमारे देश में 1937 में प्रान्तों में स्वायत्त शासन स्थापित हुआ। उसी वर्ष गांधी जी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा योजना' प्रस्तुत की जिसमें 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा 1 से 8 कक्षा तक की शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने का प्रस्ताव किया। गांधी जी एवं उनके साथियों ने इसके लिये हस्तकौशल पाठचर्या तैयार की और इसका सम्बन्ध जीवन से जोड़ा। हमारे संविधान की धारा 45 में यह घोषणा की गई है कि संविधान लागू होने के समय 10

वर्ष के अन्दर 14 वर्ष तक के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जायेगा। इसका आशय 1 से कक्षा 8 तक की शिक्षा से है।

अध्ययन की आवश्यकता

स्वतन्त्रता के उपरांत हमारे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान शिक्षा के पुनर्गठन की ओर गया। शैक्षिक विकास को वरीयता दी गई। पंचवर्षीय योजनायें प्रारम्भ की गई। इनके द्वारा शैक्षिक विकास के नवीन कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लक्ष्य निर्धारित किए गये। नये स्कूल व कॉलेज खोले गये। देश काल की परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्य विषयों में परिवर्तन किए गये। छात्रों एवं अध्यापकों की संख्या में वृद्धि हुई। माध्यमिक स्तर पर स्त्री शिक्षा के प्रसार को वरीयता दी गई। पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तकनीकी और व्यवसायिक विषयों का समावेश किया गया। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने का प्रयास किया गया। छात्रों की व्यक्तित्व समायोजन व मानसिक क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग हो व उनका सफलता के लिए मार्गदर्शन करते हुए कई प्रकार की विधियों का प्रयोग किया गया।

समस्या की उत्पत्ति

हमारे देश में इस समय शिक्षा समवर्ती सूची में है। किसी भी माध्यमिक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार का संयुक्त उत्तरदायित्व है, केन्द्र सरकार शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति बनाती है, प्रान्तीय सरकारों को शिक्षा की व्यवस्था के सम्बन्ध में सलाह देती है और आर्थिक सहायता देती है। सरकारी विद्यालयों को भी दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है केन्द्रीय सरकारों द्वारा तथा प्रान्तीय सरकारों के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित इस भिन्न-2 प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के प्रशासन, वित्त और नियन्त्रण की व्यवस्था भिन्न-2 अभिकरणों के हाथों में है और भिन्न-2 प्रकार से होती है। इतना ही नहीं अपितु कुछ माध्यमिक विद्यालय एकदम साधन विहीन है। इस निर्धन माने जाने वाले देश में 5-5 लाख डोनेशन और 5-5 हजार रु. प्रतिमाह तक शिक्षण शुल्क लेने वाले माध्यमिक विद्यालय भी चल रहे है। इस समय इन विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों को प्रान्तीय सरकारों के प्रशासनिक ढांचे के अन्तर्गत लाना, अति महा संस्थाओं पर नियन्त्रण करना और इन सब प्रकार की माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं पर नियन्त्रण रखना एक बड़ी समस्या है।

समस्या कथन

''**झाँसी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन।**''

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

(अ) व्यक्तित्व - व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति च्मतेवदंसपजल शब्द जो कि लैटिन भाषा के च्मतेवदं शब्द से हुयी है। च्मतेवदं शब्द का अर्थ है मुखौटा। इस प्रकार च्मतेवदंसपजल शब्द का अर्थ व्यक्ति के बाहृय आवरण अर्थात दृष्यगत गुणों से होता है। किन्तु वास्तव में व्यक्तित्व शब्द व्यक्ति की सम्पूर्ण आन्तरिक एवं बाहृय संरचना का द्योतक है जो कि उसके गुणों के रूप में उसके आचार तथा व्यवहार में परिलक्षित होती है।

भारतीय दर्शन के अनुसार - भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व को 'जीवात्मा' कहा जाता है, और यह सम्प्रत्यय व्यक्तित्व के मनोदैहिक संरचना से सम्बन्धित न होकर उसके नैतिक एवं आध्यात्मिक पहलू से सम्बन्धित होता है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर में जीवात्मा का वास होता है, जो व्यक्ति में सभी तरह के दैहिक एवं मानसिक संरचना में होने वाले सभी परिवर्तनों के दौरान भी अपनी मौलिक अवस्था में बना होता है। इस कारण सम्पूर्ण व्यक्तित्व आध्यात्मिक आत्म अभिव्यक्ति का एक उपयुक्त चक्रयान के रूप में कार्य करता है।

1. **अन्नमय कोष -** इसमें दैहिक शरीर तथा ज्ञानेन्द्रिय सम्मिलित होता है। यह आत्मन् का बाहृय आवरण या जैविक दैहिक आवरण होता है और अन्य सूक्ष्म तहों या आवरणों के लिए एक अल्पकालिक पर्दा का काम करता है। इसमें पाँच कर्मेन्द्रिय अर्थात् संभाषण तंत्र हाथ, पैर, उत्सर्जन अंग एवं जनन अंग सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें पाँच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आँख, कान, नाक, मुँह तथा त्वचा भी सम्मिलित होते है। अन्नमय कोष आहार से बनता है, जो हमारा शरीर है।

2. **प्राणमय कोष-** व्यक्ति के जीवन को बनाये रखने वाले पाँच जैव बल अर्थात् वायु, आग, जल, पृथ्वी तथा आकाश इसमें सम्मिलित होते हैं। इसलिए इसे जैव आवरण भी कहा जाता है, इसके भीतर प्राण क्रियाशील रहता है।

3. **मनोमय कोष** -इसे मानसिक आवरण भी कहा जाता है। मन एक मुख्य अंग होता है जो आकारहीन एवं स्थानहीन होता है। तथा यह अनुभूतियों को प्राप्त करने वाला तथा उसे रिकॉर्ड करने वाला के रूप में भी कार्य करता है। जिस इच्छाशक्ति द्वारा स्वार्थ सिद्ध करने वाला कार्य किया जाता है। उसे अहंकार कहा जाता है।

4. **विज्ञानमय कोष** - आत्मन का यह बौद्धिक आवरण होता है, और यह बुद्धि से सम्बन्धित होता है। इसके द्वारा विभेदनात्मक कार्य किये जाते हैं। मन, बुद्धि एवं अहंकार या अहम् भाव, मानव व्यक्तित्व के तीन मानसिक तत्व है।

5. **आनन्दमय कोष** - यह आत्मन् या जीवात्मा का आनन्दमय या सुखद आवरण है और इसे व्यक्तित्व की पराकाष्ठा कहा जाता है। आत्मा का वास्तविक स्वरूप आनन्द मय है। इसलिये आत्मा को सच्चिदानन्द भी कहा गया है। आत्मा शुद्ध सत् चित् और आनन्द का सम्मिश्रण है।

डी.सी. मैक्सीलैण्ड - ''व्यक्ति के व्यवहार के सभी पहलुओं के बारे में सन्तोषप्रद सम्प्रत्ययीकरण प्रस्तुत करने हेतु व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'सम्प्रत्ययीकरण' एक अमूर्त प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के व्यवहार के मूर्त स्वरूपों के आधार पर निर्मित होती है।''

(ब) समायोजन - समायोजन एक अवस्था है अर्थात् व्यक्ति की एक संतुलित अवस्था अथवा दशा जिसमें हम व्यक्ति को एक सुसामंजस्यपूर्ण व्यक्ति कहते हैं। समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और अपनी परिस्थितियों के बीच सुसामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाये रखने से होता है।

समायोजन का अर्थ - समायोजन शब्द को सामंजस्य, व्यवस्थापन अथवा अनुकूलन के नाम से भी जाना जाता है। जब कोई बालक अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता है, तो धीरे-धीरे वह आने वाली स्थितियों से समझौता कर लेता है। यह समझौते की प्रक्रिया ही मनोवैज्ञानिक भाषा में समायोजन कहलाती है।

एच.सी. स्मिथ के अनुसार - ''एक अच्छा समायोजन वह है, जो यथार्थ पूर्णता के साथ-साथ व्यक्ति को सन्तोष प्रदान करता है। अन्ततोगत्वा, यह व्यक्ति की कुण्ठाओं, उसके तनावों एवं चिन्ताओं जिन्हें उसे सहन करना पड़ता है, न्यूनातिन्यून बना देता है।'' स्मिथ की दृष्टि में व्यक्ति को ठीक प्रकार में सन्तोष मिलना ही समायोजन क्षमता का आवश्यक लक्षण है। यदि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं है, या वह अपने को भीतर से आन्दोलित महसूस करता है तो उसे हम समायोजित नहीं कह सकते हैं।

जेम्स सी. कोलमैन के अनुसार - ''समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा खिचावों से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयासों का परिणाम है।'' इस सम्बन्ध में कोलमैन ने समंजनात्मक व्यवहार को भी परिभाषित किया है। उनकी राय में 'समंजनात्मक व्यवहार' वह है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने खिंचावपूर्ण परिस्थितियों से निर्वाह करता है, अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है, तथा अपने पर्यावरण से मधुर समन्वय या तालमेल बना लेता है।

(स) व्यक्तित्व समायोजन - वातावरण के साथ समायोजन करने में व्यक्ति का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। क्योंकि वातावरण में समायोजन करने की प्रक्रिया के दौरान ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। अतः व्यक्तित्व समायोजन से तात्पर्य किसी परिस्थिति विशेष में व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति से है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

साहित्य के समीक्षा में दो शब्द है - साहित्य और समीक्षा। साहित्य शब्द परम्परागत विभिन्न अर्थ प्रदान करता है। यह भाषा के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है। इसकी विषयवस्तु के अन्तर्गत गद्य, काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि आते हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषय क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक, व्यवहारिक और तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं।

डब्ल्यू. आर. बर्ग के अनुसार - ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है। यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य सम्भवतया तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र ही होता है, जोकि पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका है।''

व्यक्तित्व से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

भारत व विदेशों में किये हुए शोधकार्य

 समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006), ने किशोरों की व्यक्तित्व विशेषताएं तथा निर्भरता प्रवृत्ति शीर्षक पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लाभान्वित तथा अलाभान्वित किशोरों की निर्भरता तथा विभिन्न व्यक्तित्व विशेषतायें प्राप्त करना है। अतः लाभान्वित किशोर वे हैं जो अभिभावक देखभाल से वंचित नहीं है तथा किसी भी प्रकार की वंचिता से पीड़ित है। यह निर्भरता मापने के लिये सिन्हा की निर्भरता प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है तथा व्यक्तित्व विशेषतायें मापने के लिये आइजनेक व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। शोधार्थी ने न्यादर्श रूप में 150 किशोरों का चयन पटना शहर से किया। परिकल्पना परीक्षण करने के उपरान्त निष्कर्ष यह प्रकट करते हैं कि ये सभी अलाभान्वित किशोर सांवेगिक उन्नयन तथा समर्थन चाहते हैं। यह जिम्मेदारी है कि उन्हें जीवन के हर पहलू में अधिक आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भर बनने में सहायता व समर्थन प्रदान करें। अतः अलाभान्वित किशोरों को समाज से शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता है। उन्हें केवल दया के आधार पर नहीं छोड़ा जा सकता है।

 जागृति तंवर (2010) जाग्रति तंवर ने ''अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरी के आत्मविश्वास, समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया। शोध अध्ययन हेतु शोधार्थिनी द्वारा राजस्थान राज्य के कोटा जिले के 13 सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के 434 किशोर एवं किशोरियों को न्यादर्श में शामिल किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये शोधार्थिनी ने निम्नलिखित उद्देश्यों का प्रयोग किया गया –

1. किशोरों के व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी में वर्गीकृत करना।
2. अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना करना।
3. व्यक्तित्व के आधार पर किशोरों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
4. बर्हिमुखी किशोर बालक एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं के आत्म विश्वास की तुलना करना।
5. बर्हिमुखी किशोर बालक एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता के अन्तर को ज्ञात करना।
6. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं के समायोजन क्षमता के अन्तर की तुलना करना।
7. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोधार्थिनी को उपयुक्त उद्देश्यों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये –

1. व्यक्तित्व मापनी के द्वारा जनसंख्या में से 214 किशोर बालक एवं 220 किशोर बालिकाओं को न्यादर्श हेतु चयन किया गया जिनकी व्यक्तित्व प्रकृति अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी है। अन्तर्मुखी किशोर छात्र 57 तथा अन्तर्मुखी किशोर छात्रायें 65 है। 157 बर्हिमुखी किशोर छात्र तथा 155 बर्हिमुखी छात्रायें न्यादर्श रूप में चयनित है।
2. अन्तर्मुखी किशोरों एवं बर्हिमुखी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि अन्तर्मुखी किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
3. अन्तर्मुखी किशोरों एवं बर्हिमुखी किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोरों की समायोजन क्षमता अन्तर्मुखी किशोरों की समायोजन क्षमता से अधिक है।

4. बर्हिमुखी किशोर बालकों एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं के आत्मविश्वास स्तर में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोर बालकों का आत्मविश्वास बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं के आत्मविश्वास स्तर से अधिक पाया गया।
5. बर्हिमुखी किशोर बालकों एवं बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर होता है। बर्हिमुखी किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता बर्हिमुखी किशोर बालकों की अपेक्षा थोड़ी अधिक पायी गयी है।
6. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नही होता है।
7. अन्तर्मुखी बालकों एवं अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अर्थात् अन्तर्मुखी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अन्तर्मुखी बालकों से अधिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन में शोध के रूप में झाँसी जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं तक सीमित है जिसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया हैं, जिनकी कुल संख्या 100 तक सीमित है।

अनुसंधान की शोध प्रक्रिया

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र या शाखा में नवीन तथ्यों, विचारों, अवधारणा या सिद्धान्त की खोज के लिए अपनाई गई क्रमबद्ध प्रक्रिया ही अनुसंधान कहलाती है।

डब्ल्यू.एस. मुनरों के अनुसार - ''अनुसंधान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है, जिसका अपूर्ण अथवा पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूँढना है।''

अनुसंधान अभिकल्प

अनुसंधान प्ररचना' में दो शब्द है - 'अनुसंधान' और 'प्ररचना'। अनुसंधान का अर्थ है। वैज्ञानिक पद्धति द्वारा तार्किक एवं व्यवस्थित ढंग से नये तथ्यों की खोज एवं पुराने तथ्यों का सत्यापन।

करलिंगर के अनुसार - ''शोध प्रारूप अनुसंधान की एक योजना संरचना तथा नीति है जिसका उपयोग अनुसंधान से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने एवं विवाद पर नियंत्रण रखने के लिए किया जाता है।''

वर्णनात्मक अनुसंधान

शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है, और यह बड़े व्यापकरूप में व्यवहार में आया है-

सर्वेक्षण अनुसंधान

सर्वेक्षण अनुसंधान का प्रयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किसी स्थिति घटना या वैचारिक चिन्तन आदि से सम्बन्धित समस्या के अध्ययन के लिए किया जाता है।

जनसंख्या

जनसंख्या को अंग्रेजी में यूनीवर्स कहा जाता हैं। यूनीवर्स का शाब्दिक अर्थ विश्व या समष्टि होता है, किन्तु निदर्शन में इसका अर्थ इकाईयों के योग या सम्पूर्णता से है।

शोध न्यादर्श विधि का चुनाव

प्रस्तुत शोध में झाँसी जनपद के माध्यमिक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया। द्वितीय स्तर पर चयनित स्तर के 100 विद्यार्थियों (छात्र/छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया। माध्यमिक विद्यालयों के चयन के पश्चात् माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की अनुमति से कक्षा-प्राध्यापकों से उपस्थित पंजिका प्राप्त की तत्पश्चात् उपस्थित छात्र-छात्राओं की सम आकार की पंक्तियाँ बनाकर एक थैली में डालकर उनको मिश्रित कर लिया फिर थैली में से बिना भेदभाव किये 15 पंक्तियाँ निकाली गयी, जिन छात्र-छात्राओं के क्रमांक प्राप्त हुए उन्हीं का प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया था।

झाँसी जनपद के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन

क्र.सं.	माध्यमिक विद्यालय का नाम
1	उच्च प्राथमिक विद्यालय, बड़ागांव, तहसील झाँसी
2	कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय, बबीना,तहसील झाँसी
3	जूनियर हाईस्कूल, चिरगाँव, तहसील मोठ
4	कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय बंगरा, तहसील मऊरानीपुर
5	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गुरसराय, तहसील गरौठा

झाँसी जनपद के गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का चयन

क्र.सं.	माध्यमिक विद्यालय का नाम
1	ज्ञान स्थली पब्लिक इण्टर कॉलेज, झाँसी
2	बड़ागांव इण्टर कॉलेज, बड़ागांवझाँसी
3	टी एम के खैर इण्टर कॉलेज, गुरसराय, गरौठा झाँसी
4	आदर्श इण्टर कॉलेज, मोठ झाँसी
5	लक्ष्मण प्रसाद दमेले इण्टर कॉलेज, मऊरानीपुर झाँसी

E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -5 March 2024

यादृच्छिक या दैवीय प्रतिदर्शन

इस विधि को कभी-कभी सरल यादृच्छिक न्यादर्श कभी-कभी अप्रतिबन्धित यादृच्छिक न्यादर्श तथा कभी-कभी केवल यादृच्छिक न्यादर्श भी कहते हैं। इस प्रविधि के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को चुने जाने के समान अवसर होते हैं। एक सरल यादृच्छिक न्यादर्श एक-एक इकाई को लेकर उद्धृत किया जाता है। जनसंख्या का अंकन एक से आगे की अन्तिम संख्या (1 से 6 तक) किया जाता है तथा यादृच्छिक संख्याओं की श्रृंखला का चुनाव या तो यादृच्छिक संख्याओं की सारणी की सहायता से किया जाता है।

मानकीकृत परीक्षण

परीक्षण मानकीकरण से हमारा आशय ऐसी प्रक्रिया से हैं जिसमें विषय वस्तु विधि एवं निष्कर्ष सभी समरूप से निश्चित हो तथा जिसके लिए किन्हीं निश्चित मानकों को निर्धारित किया जाता हो।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

परीक्षण का चयन

शोधार्थी के व्यक्तित्व समायोजन के सन्दर्भ में एक ही परीक्षण आर.के. ओझा द्वारा रचित 'व्यक्तित्व समायोजन मापनी' उपलब्ध हो सका। फलस्वरूप शोध के सन्दर्भ में इसी उपलब्ध परीक्षण को वरीयता प्रदान की गई।

सांख्यिकीय विधियाँ

मध्यमान

''मध्यमान वह मान अथवा राशि है, जो किन्हीं दी हुई राशियों अथवा प्राप्तांकों के योगफल को उन राशियों की संख्या से भाग देने पर आती है।''

$$m = A.M. + \frac{\Sigma fd}{N} \times Ci$$

A.M. = कल्पित माध्य

Σfd = विभिन्न वर्गों की आवृत्तियों व विचलनों की गुणन का योग

Ci = वर्गान्तर श्रेणी

N = पदों की संख्या (कुल आवृत्ति)

मानक विचलन अपना प्रामाणिक विचलन

विचलन ज्ञात करने की यह सर्वोत्तम मापक तथा विधि है। इसलिए इस मापक का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है।

टीपरीक्षण-

दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की परख के लिये 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sigma D}$$

M_1 = पहले समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान

M_2 = दूसरे समूह के प्राप्तांकों का मध्यमान

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्त आकृति और प्राप्तांक के रुप में एकत्रित किये जाते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है। अधिकांशतः परीक्षणों के द्वारा जो प्रदत्त एकत्रित किये जाते हैं, वह प्राप्तांकों के रुप में होते हैं तथा प्रश्नावली से प्राप्त प्रदत्त आकृति के रुप में होते हैं। प्रदत्त वह वस्तु है, जिनकी सहायता से हम समझते हैं कि शोध के निष्कर्ष वैध तथा विश्वसनीय हैं। इनकी प्रमाणिकता की परख की जा सकती है।

H_1- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	मुक्तांश 0.05	सार्थकता स्तर		परिणाम
छात्र	50	30.65	5.925	0.286	98	.05	1.98	अस्वीकृत
छात्राएं	50	28.95	4.275			.01	2.63	

df = N – 2 = 100 – 2 = 98

अर्थापन - उपरोक्त सारणी संख्या में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की गणना की गई है।

1. छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 30.65 व 28.95 है।
2. छात्र एवं छात्राओं के प्रमाप विचलन क्रमशः 5.925 व 4.275 है।

दोनों समूहों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान0 .286 प्राप्त हुआ। तथा तालिका में मुक्तांश (df) 98 पर सार्थकता स्तर1 .98 है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान मानकीकृत तालिका मान 0.05 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है और शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में अन्तर है और छात्रों का व्यक्तित्व समायोजन छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन से अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ

जॉन डी.वी - के अनुसार .''सीखने का विषय या पाठ्यक्रम पदार्थों विचारों और सिद्वान्तों का चित्रण है जो कि उद्देश्यपूर्ण लगातार क्रियान्वेषण संसाधन या बाधा के रूप में आ जाते हैं।''

पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक व सामाजिक विकास को इंगित करता है। बालकों में उचित व्यक्तित्व के गुणों के संयोजन से ही बालकों में सर्वांगीण विकास की प्राप्ति की जा सकती है। बालकों के सामने विभिन्न समस्याओं को रखकर उनके वर्तमान में जीने के लिए सुझाव में उनकी परामर्श लेनी चाहिए। अभिभावक उन्हें वर्तमान में जीने के लिए परिस्थितियों का

उचित निर्माण करें तथा हमेशा भविष्य की चुनौतियों के लिए खुले मस्तिष्क से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें हमेशा उचित वातावरण में रहने के लिए योग्य बनाने का प्रयास करे। आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षक बालकों में व्यक्तित्व के गुणों का विकास करता है। उनमें रचनात्मकता शक्ति का विकास करता है। जिससे बालक अपने आत्मिक चित्रों को रूपित करता है और समाज में उचित स्थान प्राप्त करता है।

शिक्षक का परम कर्तव्य है कि बालक के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना इसके लिए शिक्षक वृहद स्तर पर शारीरिक प्रशिक्षण, शैक्षिक प्रशिक्षण, मानसिक प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनमें समय का पालन करने की शिक्षा प्रदान करते हैं। किशोर छात्रों के जीवन में ध्यान की कमी, ध्यान उचटना, अतिसक्रियता, चिड़चिड़ापन, आवेगशीलता, कुण्ठा, सहनशीलता की कमी पायी जाती है। उसको अवसाद डिप्रेशन, पलायन, चिन्ता, भय, मनोग्रस्तता, दैहिक कष्ट तथा सिज्वाइड लक्षण आदि पाये जाते हैं।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान एवं प्रमाप विचलन की गणना की गई है। छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 30.65 व 28.95 है। छात्र एवं छात्राओं के प्रमाप विचलन क्रमशः 5.925 व 4.275 है। दोनों समूहों की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.286 प्राप्त हुआ। तथा तालिका में मुक्तांश (df) 98 पर सार्थकता स्तर 1.98 है। गणना द्वारा प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान मानकीकृत तालिका मान 0.05 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है और शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन में अन्तर है और छात्रों का व्यक्तित्व समायोजन छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन से अधिक है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव

1. यह अध्ययन केवल 100 छात्र-छात्राओं पर किया गया है। अतः बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है। जबकि इसमें स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

3. अध्ययन से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को लेकर किया जा सकता है।

4. यह अध्ययन नवोदय विद्यालय व केन्द्रीय विद्यालयों में भी किया जा सकता है।

5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन अन्य चरों के साथ भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. समिधा पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी (2006), Samidha, Pandey and Vijay Lakshmi (2006); “Personality Characteristics and Dependent Proneness of Adolescents”, Psycho-Lingua, Agra: Publish-Linguistic Association of India, ISSN:0377-3132, Vol-36, No-2, July-2006, Pg-156-158.
2. जागृति तंवर (2010) ‘‘अन्तर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व का किशोरों के आत्मविश्वास समायोजन एवं उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन’’, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पी.एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) उज्जैन (म.प्र.)
3. स्वरूप, आशीष (2021); ‘‘पाठ्यक्रम अध्ययन’’; माधव प्रकाशन, आगरा, पेज नं.- 60, 90, 107, 108
4. डॉ. सारस्वत, मालती, प्रो. एस.एन. गौतम, ‘‘भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें’’ आलोक प्रकाशन, लखनऊ, पेज- 226, 242, 246 ISBN No. – 978-81-89599-02-7
5. शर्मा, प्रो.ए.के. (2008); ‘‘शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ’’, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पेज नं.- 277-282, 179, 181.
6. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014); ‘‘शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि’’; अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पेज नं.- 11, 12.
7. सिंह, अरूण कुमार एवं आशीष कुमार सिंह, ‘‘व्यक्तित्व का मनोविज्ञान’’; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पटना, पेज नं.- 435-437, 1-41, 57.

8. गुप्ता, प्रो. एस.पी. (2012); ''अनुसंधान संदर्शिका'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पेज नं.- 01-22, 37-53, 54-61, 62-90, 107-120, 165-180, 181-191, 210-223, 261-292, 325-344, 345-362, 470-498.
9. भार्गव, डॉ. महेश (2007); ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पेज नं.-141-232.
10. कपिल, डॉ. एच.के. (2012); ''अनुसंधान विधियाँ- व्यवहारपरक विज्ञानों में'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पेज नं.-150-162, 220-290, 366.
11. राय, पारसनाथ, डॉ. सी.पी. राय (2012); ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पेज नं.- 95-107, 233-287, 19-20, 119.
12. पाठक, पी.डी. (2010); ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
13. लाल, रमन बिहारी (2012); ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
14. www.samajkaryshiksha.com
15. www.ncert.nic.in
16. www.humhindi.in
17. www.newssapata.com
18. www.upboardsolutions.com
19. www.socialresearchfoundation.com
20. www.educationjournal.org
21. www.scert.cg.gov.in
22. www.studypoint24.com
23. www.ncert.nic.in
24. www.wikipedia.org
25. www.shodhgangotri.com
26. www.hindisamay.com
27. www.myhindilekh.in